जीन उपचार को स्वीकृति मिली

वैसे तो चीन में 2004 में ही कैंसर उपचार के लिए एक जीन चिकित्सा को मंज़ूरी मिल चुकी थी मगर अब युरोप में भी जीन चिकित्सा को स्वीकृति मिली है। यह उपचार एक ऐसी तकलीफ के लिए है जो बहुत ही कम लोगों को प्रभावित करती है। लगभग 10 लाख लोगों में से 1-2 व्यक्तियों में वह एंज़ाइम नहीं बनता जो वसा के विघटन के लिए ज़िम्मेदार होता है।

जीन चिकित्सा का मतलब होता है मरीज़ के शरीर में वह जीन उपलब्ध कराना जिसके अभाव में उसे कोई बीमारी होती है। ग्लायबेरा नामक इस उपचार में लिपोप्रोटीन लाइपेज़ नामक एंज़ाइम से सम्बंधित जीन को एक वायरस में जोड़कर इंजेक्शन के ज़रिए मरीज़ के शरीर में पहुंचाया जाता है।

जब 2004 में चीन में जीन चिकित्सा की अनुमति दी गई थी, उस समय इसे लेकर काफी विवाद हुआ था। खास तौर से चिंता का विषय यह रहा है कि इस तरह से वायरस के माध्यम से जीन पहुंचाने में कैंसर पैदा होने का खतरा हो सकता है। इसी आधार पर युरोपीय चिकित्सा एजेंसी की मानव उपयोग के लिए औषधि उत्पाद समिति ने ग्लायबेरा को नामंज़ूर कर दिया था।

अब इसे स्वीकृति मिलने का आधार यह है कि यह तकलीफ बहुत ही कम लोगों को प्रभावित करती है और उनमें से भी बहुत कम लोगों को यह चिकित्सा दी जाएगी। लिहाज़ा इसका मॉनिटरिंग करना आसान होगा और असर बहुत बड़े पैमाने पर नहीं होंगे। फिलहाल इसे सिर्फ उन लोगों में उपयोग के लिए स्वीकृत किया गया है जिन्हें लिपोप्रोटीन लाइपेज़ एंजाइम के अभाव के कारण पैंक्रियाज़ की समस्या पैदा होती है।

जीन चिकित्सा सम्बंधी शोधकर्ताओं का मानना है कि इस स्वीकृति के बाद इस तरह के शोध में उछाल आएगा और जल्दी ही जीन चिकित्सा एक जानी-मानी चीज़ बनेगी। इस तरह के कई अन्य जीन उपचार मंज़ूरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ग्लायबेरा को मिली स्वीकृति उनके लिए भी रास्ते खोल देगी। ***(स्रोत फीचर्स)***